प्रातः क्लास 23/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझा रहे हैं। यह जो 84 के चक्र का ज्ञान समझाया जाता है यह तो एक नॉलेज है। नालेज तो तुम बच्चों ने जन्म–जन्मान्तर पढ़ी है और धारण करते आये हो। वह तो बिल्कुल ही सहज है। यह कोई नई बात नहीं। बाप बैठ समझाते हैं तुमने 84 जन्मों को पार्ट कैसे बजाया है सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक। तुमने कितने पुनर्जन्म लिये हैं। यह ज्ञान तो सहज रीति बुद्धि में है ही। यह भी एक पढ़ाई है। रचना के आदि–मध्य–अन्त को समझना सो तो बाप के सिवाय और कोई समझा नहीं सकते। बाप ही समझाते हैं। यह तो अभी बाप द्वारा समझ लिया है कि हमने 84 का चक्र कैसे खाया है। बाप कहते हैं इस ज्ञान से भी ऊँच बात है याद की यात्रा। जिसको योग कहा जाता है। योग अक्षर बहुत ही मशहूर है; परन्तु यह है याद की यात्रा। जैसे मनुष्य यात्राओं पर जाते हैं ना। कहेंगे हम फलाने तीर्थ यात्रा पर जाते हैं। श्रीनाथ या अमरनाथ जाते हैं। वह याद रहता है। अभी तुम जानते हो रूहानी बाप तो बड़ी लम्बी याद सिखलाते हैं कि मुझे याद करो। उन यात्राओं से तो फिर लौट आते हैं। यह वह यात्रा है जो मुक्तिधाम जाकर निवास करना है। भल फिर पार्ट में आना है; परन्तु इस दुनिया में नहीं। इस पुरानी दुनिया से तुमको वैराग्य है। यह तो छी–छी रावण–राज्य है ना। तो मूल बात है यह याद की यात्रा। कई बच्चे यह भी समझते नहीं हैं कि कैसे याद करना है। जो समझते हैं तो उठते–बैठते, चलते–फिरते बाप को याद करते हैं। कोई याद करते हैं वा नहीं करते हैं, यह देखने में तो कोई चीज़ नहीं आती है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। देखने की तो चीज़ नहीं। न मालूम ही पड़ सकता है। यह इस अवस्था में कहाँ तक रह सकते हैं। कहाँ तक याद की यात्रा में कायम रहते हैं यह तो खुद ही जाने। युक्ति तो बहुतों को बताते रहते हैं। कल्याणकारी बाप ने समझाया है अपन को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो। भल अपनी सर्विस भी करते रहो। जैसे मिसाल यह जगराम पहरे पर है, चक्र लगाते रहते हैं, इनको याद में रहना तो बड़ा सहज है। सिवाय बाप की याद के और कुछ याद न आना चाहिए। बाबा मिसाल दे बताते हैं। इस याद की यात्रा में ही आवे–जावे। जैसे पादरी लोग जाते हैं कितना साइलेन्स में जाते हैं। तो तुम बच्चों को भी बड़ा प्रेम से बाप को और घर को याद करना है। यह मंजिल बड़ी भारी है। भक्त लोग भी यही पुरुषार्थ करते रहते हैं; परन्तु उनको यह पता नहीं है कि हमको वापस जाना है। वह तो समझते हैं जब कलियुग पूरा होगा तब जावेंगे। उनको ऐसे सिखलाने वाला तो कोई नहीं है। तुम बच्चों को तो सिखलाया जाता है। जैसे पहरा देते हो तो एकान्त में जितना बाप को याद करेंगे उतना अच्छा है। याद से ही पाप कटते हैं। जन्म–जन्मान्तर के पाप सिर पर है ना। जो पहले सतोप्रधान बनते हैं, रावण राज्य में भी पहले वह जाते हैं। तो उनको ही फिर सबसे जास्ती याद की यात्रा में रहना है। कल्प2 की बात है ना। तो इनको याद की यात्रा में रहने का बहुत अच्छा चान्स है। यहाँ तो कोई लड़ाई–झगड़े की बात ही नहीं। आते–जाते वा बैठे एक पंथ दो कार्य। पहरा भी दो। बाप को याद भी करो। कर्म करते बाप को याद करते रहो। पहरे वाले को तो सबसे जास्ती फायदा है, चाहे दिन चाहे रात को जो पहरा देते हैं उन्हों के लिए बहुत फायदा है अगर यह याद में रहने की टेव पड़ जाये तो। बाप ने यह सर्विस तो बहुत अच्छा दी है। पहरा और याद की यात्रा। यह भी चान्स मिलता है बाप की याद में रहने का। यह भिन्न2 युक्तियाँ बताई जाती है याद की यात्रा में रहने की। यहाँ तुम जितना याद की यात्रा में रह सकेंगे उतना बाहर धंधे आदि में नहीं। इसलिए मधुबन में आते हैं रिफ्रेश होने। एकान्त में जाकर एक पहाड़ पर बैठ याद की यात्रा में रहे। फिर एक जाये वा दो–तीन जाये। यहाँ चान्स बहुत अच्छा है। यही मुख्य है बाप की याद। मशहूर भी बहुत है भारत का प्राचीन योग। अभी तुम जानते हो इस याद से पाप कटने हैं। हम सतोप्रधान बन जावेंगे। तो इसमें पुरुषार्थ भी अच्छा करना है। बहादुरी तो इसमें है जो काम करते बाप को याद करे दिखलावे। कर्म तो करना ही है; क्योंकि तुम प्रवृत्ति मार्ग वाले हो। गृहस्थ व्यवहार में रहते धंधा आदि करते बुद्धि में बाप की याद रहे। इनसे तुम्हारी बहुत कमाई है। भल अभी कितने बच्चों की बुद्धि में नहीं आता है। बाबा कहते रहते हैं चार्ट

रखो। थोड़ा बहुत कोई कोई लिखते हैं। बाप युक्तियाँ तो बहुत बतलाते हैं। बच्चे चाहते हैं बाबा के पास जावें। यहाँ बहुत कमाई कर सकते हैं। एकान्त बहुत अच्छा है। बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जायें; क्योंकि जन्म–जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। यह बाप तो जानते हैं विकार के लिए कितने झगड़े आदि चलते हैं। विघ्न पड़ते हैं। कहते हैं बाबा हमको पवित्र रहने नहीं देते हैं। बाबा कहते हैं अच्छा बच्ची तुम याद की यात्रा में रह जन्म–जन्मान्तर के पाप जो सिर पर है वह बोझा तो उतारो। घर में बैठे शिवबाबा को याद करती रहो। याद तो कहाँ भी रहते कर सकते हैं। कहाँ भी रहते यह अपनी प्रैक्टिस करनी है। जो भी आवे उनको यह पैगाम दो। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। इनको ही योगबल कहा जाता है। बल माना ताकत। शक्ति। बाप को सर्वशक्तिवान कहते हैं। तो वह शक्ति बाप से कैसे मिलेगी। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो। तुम नीचे उतरते2 तमोप्रधान बन गये हो। वह शक्ति बिल्कुल खत्म हो गई है। पाई की भी न रही है। इन बातें को दुनिया के मनुष्य बिल्कुल ही नहीं जानते। तुम्हारे में कोई है जो अच्छी रीत समझते हैं। बाप को याद करते हैं। अपने दिल से पूछना है हमारा चार्ट कैसा रहता है। बाप तो सभी बच्चों को कहते हैं याद की यात्रा मुख्य है। याद से ही तुम्हारे पाप कटेंगे। तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। बाप कहते हैं कल्प2 हर 5000 वर्ष बाद तुमको आकर समझाता हूँ। भल कहाँ भी रहो, विलायत में अकेले हो; क्योंकि जोड़ी होते हैं तो एक/दो को सावधान करते हैं। भल कोई सावधान करने वाला भी न हो, बाप को तो याद कर सकते हो ना। समझो शादी किया हुआ है, स्त्री और कोई जगह है तो उनको भी लिख सकते हो, तुम एक बात सिर्फ याद करो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे जन्म–जन्मान्तर के पाप भस्म हो जावेंगे। अभी 84 का चक्र पूरा होता है। यह पुरानी पतित दुनिया का विनाश समाने खड़ा है। युक्तियाँ तो बहुत समझाते रहते हैं। फिर कोई करे न करे उनकी मर्जी। बच्चे समझते जरूर होंगे बाबा राय तो बहुत अच्छी देते हैं। हमारा काम है मित्र–सम्बन्धी आदि जो भी मिले सभी को यह पैगाम देना। दोस्त हो वा कोई भी हो सर्विस का शौक चाहिए। तुम्हारे पास चित्र तो है। बैज भी है। बैज तो बड़ी अच्छी चीज़ है। बैज किसको यह ल0ना0 बना सकता है। सिर्फ समझाना है यह है त्रिमूर्ति। इनके ऊपर है शिवबाबा। वह लोग त्रिमूर्ति बनाते हैं ऊपर में शिव दिखाते नहीं है। शिव को न जानने के कारण भारत का बेड़ा डूबा हुआ है। अभी तुम समझाते हो सबसे पहले तो है परमपिता परमात्मा शिव रचयिता। जिस द्वारा ही भारत का बेड़ा पार होता है। वह लोग तो त्रिमूर्ति का अर्थ ही नहीं समझते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। पतित बनते हैं तो फिर पुकारते रहते हैं। हे पतित पावन आकर पतितों को पावन बनाओ। तुम जानते हो यह पतित दुनिया है। कितनी पाई पैसे की भूल है। बिल्कुल साधारण भल है। जैसे बाप बैठ समझाते हैं वैसे तुमको भी भाषण करना है। भल बच्चे सर्विस तो करते रहते हैं। ड्रामा के प्लैनानुसार ऐसे ही चलता आ रहा है। बाप भी डायरेक्शन देते रहते हैं ऐसे2 म्युजियम खोलो, सर्विस करो तो बहुत आवेंगे। सरकस भी बड़े2 शहर में खालेते हैं ना। कितना उन्हों के पास सामान रहता है। गांव2 से लोग देखने लिए आते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं तुम भी ऐसा खूबसूरत म्युजियम बनाओ जो देखकर खुश हो जाये फिर औरों को जाकर सुनावे। यह भी समझते हो जो कुछ सर्विस होती है कल्प पहले मिसल ही होते रहते हैं; परन्तु सतोप्रधान बनने का ओना बहुत रखना है। उनमें ही बच्चे गफलत करते हैं। माया विघ्न भी ऐसी याद की यात्रा में ही डालती है। अपने दिल से पूछना है इतना हमको शौक है मेहनत करते हैं। जैसे बाप समझाते हैं ज्ञान तो कामन बात है। बाप बिगर यह 84 का चक्र कोई समझा न सके। बाकी याद की यात्रा है मुख्य। पिछाड़ी में कोई भी याद न आये। सिवाय एक बाप के। डायरेक्शन तो बाप पूरी रीति देते रहते हैं। भल माया अपोजीशन करती है, मुख्य बात है ही याद करने की। सभी तो यह सिखला न सके। वह जानते ही नहीं है। तुम कोई को भी समझा सकते हो। भल कोई भी हो तुम सिर्फ यह बैज दिखाओ। और कोई पास ऐसे अर्थ सहित मिडल होते ही नहीं। मिलिट्री को भी बहुत मिलते हैं। जो अच्छा काम करते हैं उनकी मिडिल मिलती है। राय साहब

का मिडिल। सभी देखेंगे इनको वायसराय से टाइटल मिला है। आगे वायसराय आदि होते थे। क्वीन एपायन्ट करती थी। अभी उनके पास भी कोई पावर्स नहीं है। अभी कितने झगड़े ही झगड़े लगे पड़े हैं। पानी के लिए, जमीन के लिए झगड़ा। वहाँ तो ढेर जमीन पड़े रहते हैं। आगे तो जमीन बहुत ही सस्ती थी। अभी कितनी महंगी हो गई है। इस समय बहुत कीमत है; क्योंकि मनुष्य बहुत हो गये हैं ना। तो उनके लिए जरूर जमीन भी चाहिए शहर में। जंगल में रहने से तो डरते हैं। कितने ढेर मनुष्य हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। इतने सभी खलास हो, बाकी कितने थोडे जाकर रहेंगे। जमीन कितनी ढेर होगी। वहाँ तो सभी कुछ नया होगा। 5 तत्व भी सतोप्रधान बन जाते हैं। खानियाँ आदि सभी नया होगा। उस नई दुनिया में चलने लिए फिर अच्छी रीति पुरुषार्थ करना है। हरेक मनुष्य पुरुषार्थ करते हैं ऊँच पद पाने। कोई पूरा पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो समझते हैं नापास हो जावेंगे। खुद भी समझते हैं हम फेल हो जावेंगे। फिर पढ़ाई आदि को छोड़ कोई नौकरी में लग जाते हैं। आजकल तो नौकरी में भी बहुत कड़े कायदे निकालते रहते हैं। मनुष्य बहुत दुखी हैं। अभी बाबा तुमको ऐसा रास्ता बताते हैं जो 21 जन्म दुख का कब नाम न होगा। बाप कहते हैं सिर्फ याद की यात्रा में रहो। जितना हो सके। रात को बहुत अच्छा है। भल लेटे हुए याद करो। कोई को सोये फिर नींद आ जाती है। बूढ़ा होगा जास्ती बैठ न सकेगा तो जरूर सो जावेंगे। सोये हुए बाप को याद करते रहेंगे। यह पक्का कमाई में कब झुटका नहीं आवेगा। जवान है, उठकर याद में बैठेंगे, फिर तो सोने की दिल ही नहीं होगी। बड़ी खुशी अन्दर में होती रहेगी; क्योंकि बहुत–2 कमाई है। अभी तुम समझते हो टाइम पड़ा हुआ है; परन्तु मौत का कोई ठिकाणा थोड़े ही है। तो बाप समझाते हैं मूल है याद की यात्रा। बाहर शहरों में तो मुश्किल है। यहाँ आते हैं बड़ा अच्छा चान्स मिलता है। कोई फिकरात की बात ही नहीं। इसलिए यहाँ चार्ट बढ़ाते रहो। इससे तुम्हारे कैरेक्टर्स भी सुधरते जावेंगे; परन्तु माया भी बड़ी दुस्तर है। घर में रहने वालों को इतना कदर नहीं रहता है। फिर भी इस समय गोपों की रिजल्ट अच्छी है।

कई बच्चियाँ लिखती हैं शादी के लिए बहुत तंग करते हैं क्या करें? जो मज़बूत सेन्सीबुल बच्चियाँ होंगी वह कब ऐसे लिखेंगी नहीं। लिखते हैं तो बाबा समझ जाते हैं रीढ बकरी है। यह तो है अपने हाथ में अपने जीवन को बचाना। इस दुनिया में तो अनेक प्रकार के दुख हैं। अभी बाप तो बहुत सहज बतलाते हैं। अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करो। यह बैज तो सदैव ही लगी रहे। कोई को भी समझाओ शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा यह स्थापना कर रहे हैं। कितनी सहज बात है। तुम बच्चे तो महान भाग्यशाली हो। जो आकर साहबजादे बने हो। बाप कितना ऊँच बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम मुझे कितनी गालियाँ देते हो। सो भी कच्ची गाली। समझते ही नहीं। अथाह गालियाँ देते हैं। इतने तमोप्रधान हैं जो बात मत पूछो। इससे जास्ती और क्या सहन करेंगे। कहते हैं ना जास्ती तंग करेंगे तो खत्म कर देंगे। तो यह बाप बैठ समझाते हैं। शास्त्रों में तो कहानियाँ लिख दी है। बाबा बहुत युक्तियाँ सहज बतलाते हैं। कर्म करते हुए याद करो। इसमें बहुत2 फायदा है। सवेरे आकर याद में बैठो। बहुत2 मज़ा आवेगा; परन्तु इतना शौक नहीं है। टीचर स्टुडेन्ट की चलन से समझ जाते हैं। यह तो फेलीयर हो जावेंगे। बाप भी समझते हैं यह फेल हो जावेंगे। सो भी कल्प–कल्पान्तर के लिए। भल भाषण में तो बहुत होशियार हैं। प्रदर्शनी झट समझा लेते हैं; परन्तु याद है नहीं। इसमें ही फेल हो पड़ते। डिस रिगार्ड भी बहुत करते हैं। अपना ही करते हैं। शिवबाबा का तो डिसरिगार्ड होता ही नहीं। अपना ही करते हैं। ऐसे कोई कह न सके। हमको फुर्सत नहीं है याद करने की। बाबा मानेंगे ही नहीं। टट्टी पर, स्नान पर भी याद कर सकते हो। भोजन खाते हो बाप को याद करो। बहुत–बहुत कमाई है। सिर्फ भाषण में नामी–ग्रामी है। योग है नहीं। वह अहंकार भी गिरा देती है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

– : याद की यात्रा में हो? :–